महिषासुरमर्दिनि स्तोत्रं

महिषासुरमर्दिनि स्तोत्रं

अयि गिरिनंदिनि नंदितमेदिनि विश्वविनोदिनि नंदिनुते
गिरिवरविंध्यशिरोधिनिवासिनि विष्णुविलासिनि जिष्णुनुते |
भगवति हे शितिकंठकुटुंबिनि भूरिकुटुंबिनि भूरिकृते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते || 1 ||

सुरवरवर्षिणि दुर्धरधर्षिणि दुर्मुखमर्षिणि हर्षरते
त्रिभुवनपोषिणि शंकरतोषिणि कल्मषमोषिणि घोररते | [किल्बिष-, घोष-]
दनुजनिरोषिणि दितिसुतरोषिणि दुर्मदशोषिणि सिंधुसुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते || 2 ||

अयि जगदंब मदंब कदंबवनप्रियवासिनि हासरते
शिखरिशिरोमणितुंगहिमालयशृंगनिजालयमध्यगते |
मधुमधुरे मधुकैटभगंजिनि कैटभभंजिनि रासरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते || 3 ||

अयि शतखंड विखंडितरुंड वितुंडितशुंड गजाधिपते
रिपुगजगंड विदारणचंड पराक्रमशुंड मृगाधिपते |
निजभुजदंड निपातितखंडविपातितमुंडभटाधिपते [चंड]
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते || 4 ||

अयि रणदुर्मद शत्रुवधोदित दुर्धरनिर्जर शक्तिभृते
चतुरविचारधुरीण महाशिव दूतकृत प्रमथाधिपते |
दुरितदुरीहदुराशयदुर्मतिदानवदूतकृतांतमते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते || 5 ||

अयि शरणागतवैरिवधूवर वीरवराभयदायकरे
त्रिभुवन मस्तक शूलविरोधिशिरोधिकृतामल शूलकरे |
दुमिदुमितामर दुंदुभिनाद महो मुखरीकृत तिग्मकरे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते || 6 ||

अयि निजहुंकृतिमात्र निराकृत धूम्रविलोचन धूम्रशते
समरविशोषित शोणितबीज समुद्भवशोणित बीजलते |
शिव शिव शुंभ निशुंभ महाहव तर्पित भूत पिशाचरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते || 7 ||

धनुरनुसंग रणक्षणसंग परिस्फुरदंग नटत्कटके
कनक पिशंगपृषत्कनिषंगरसद्भट शृंग हतावटुके |
कृतचतुरंग बलक्षितिरंग घटद्बहुरंग रटद्बटुके
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते || 8 ||

सुरललना ततथेयि तथेयि कृताभिनयोदर नृत्यरते
कृत कुकुथः कुकुथो गडदादिकताल कुतूहल गानरते |
धुधुकुट धुक्कुट धिंधिमित ध्वनि धीर मृदंग निनादरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते || 9 ||

जय जय जप्य जये जय शब्दपरस्तुति तत्पर विश्वनुते
भण भण भिंजिमि भिंकृतनूपुर सिंजितमोहित भूतपते | [झ-, झिं-]
नटितनटार्ध नटीनटनायक नाटितनाट्य सुगानरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते || 10 ||

अयि सुमनः सुमनः सुमनः सुमनः सुमनोहर कांतियुते
श्रित रजनी रजनी रजनी रजनीकर वक्त्रवृते |
सुनयन विभ्रमर भ्रमर भ्रमर भ्रमर भ्रमराधिपते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते || 11 ||

सहित महाहव मल्लम तल्लिक मल्लित रल्लक मल्लरते
विरचित वल्लिक पल्लिक मल्लिक भिल्लिक भिल्लिक वर्ग वृते |
सितकृत फुल्लसमुल्लसितारुण तल्लज पल्लव सल्ललिते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते || 12 ||

अविरलगंडगलन्मदमेदुर मत्तमतंगज राजपते
त्रिभुवनभूषणभूतकलानिधि रूपपयोनिधि राजसुते |
अयि सुदतीजन लालसमानस मोहनमन्मथ राजसुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते || 13 ||

कमलदलामल कोमलकांति कलाकलितामल भाललते
सकलविलासकलानिलय क्रमकेलिचलत्कलहंसकुले |
अलिकुल संकुल कुवलय मंडल मौलिमिलद्भकुलालि कुले
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते || 14 ||

करमुरलीरववीजितकूजित लज्जितकोकिल मंजुमते
मिलित पुलिंद मनोहर गुंजित रंजितशैल निकुंजगते |
निजगुणभूत महाशबरीगण सद्गुणसंभृत केलितले
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते || 15 ||

कटितटपीत दुकूलविचित्र मयूखतिरस्कृत चंद्ररुचे
प्रणतसुरासुर मौलिमणिस्फुरदंशुलसन्नख चंद्ररुचे |
जितकनकाचल मौलिपदोर्जित निर्भरकुंजर कुंभकुचे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते || 16 ||

विजित सहस्रकरैक सहस्रकरैक सहस्रकरैकनुते
कृत सुरतारक संगरतारक संगरतारक सूनुसुते |
सुरथसमाधि समानसमाधि समाधिसमाधि सुजातरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते || 17 ||

पदकमलं करुणानिलये वरिवस्यति योऽनुदिनं स शिवे
अयि कमले कमलानिलये कमलानिलयः स कथं न भवेत् |
तव पदमेव परंपदमित्यनुशीलयतो मम किं न शिवे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते || 18 ||

कनकलसत्कल सिंधुजलैरनुसिंचिनुतेगुणरंगभुवं
भजति स किं न शचीकुचकुंभ तटीपरिरंभ सुखानुभवं |
तव चरणं शरणं करवाणि नतामरवाणि निवासि शिवं
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते || 19 ||

तव विमलेंदुकुलं वदनेंदुमलं सकलं ननु कूलयते
किमु पुरुहूत पुरींदुमुखी सुमुखीभिरसौ विमुखीक्रियते |
मम तु मतं शिवनामधने भवती कृपया किमुत क्रियते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते || 20 ||

अयि मयि दीनदयालुतया कृपयैव त्वया भवितव्यमुमे
अयि जगतो जननी कृपयासि यथासि तथाऽनुभितासिरते |
यदुचितमत्र भवत्युररि कुरुतादुरुतापमपाकुरु ते [मे]
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते || 21 ||

इति श्री महिषासुरमर्दिनि स्तोत्रं ||